ISSN : 2455-9679
SJIF Impact Factor : 6.008

IJRTSM
INTERNATIONAL JOURNAL OF RECENT TECHNOLOGY SCIENCE & MANAGEMENT

"डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना"

लक्ष्मी देवी [1], डॉ. ब्रजलता शर्मा [2]
[1] शोधकर्ता, हिंदी विभाग पीके विश्वविद्यालय, शिवपुरी मध्य प्रदेश
[2] शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग पीके विश्वविद्यालय, शिवपुरी मध्य प्रदेश

सारांश

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' समकालीन हिंदी साहित्य में एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिनका रचना-संसार केवल साहित्यिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों का भी संवाहक है। उनके उपन्यासों में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, शिक्षा, विज्ञान और सामाजिक उत्थान के विभिन्न पक्षों का गहन चित्रण मिलता है। वे अपने पात्रों के माध्यम से भारतीय दर्शन, राष्ट्रप्रेम, नैतिकता, और आत्मबल की भावना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते हैं। निशंक जी का साहित्य भारतीय इतिहास, परंपरा और समकालीन भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश का सेतु बनता है, जिसमें 'कमल खिलने दो', 'स्वर्ग उसी के नीचे है', और 'कोशिशों की उड़ान' जैसे उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी रचनाओं में न केवल स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा झलकती है, बल्कि आधुनिक भारत में शिक्षा और विज्ञान के विकास, ग्रामीण सशक्तिकरण, तथा नैतिक मूल्यों के पुनर्प्रतिष्ठान का संदेश भी मिलता है। वे भारतीयता को केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीने की शैली मानते हैं। यह शोधपत्र उनके उपन्यासों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना की उस अंतर्धारा का विश्लेषण करता है, जो साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, अपितु राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बनाती है।

कीवर्ड्स : *राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक चेतना, भारतीयता, परंपरा, समकालीन साहित्य, डॉ. निशंक*

I. परिचय

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की रचनाधर्मिता का इतिहास भारतीय साहित्य और राजनीति के एक अनोखे संगम को दर्शाता है। उनका साहित्यिक जीवन 1980 के दशक से प्रारंभ हुआ, जब उन्होंने कविता और लेखों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया। बाद में उन्होंने उपन्यासों, यात्रा-वृत्तांतों, और निबंधों की ओर रुख किया। विशेषकर उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का जो स्वरूप उभरकर आया, वह समकालीन हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, लोकतांत्रिक मूल्यों, भारतीय संस्कृति की महानता और सामाजिक सरोकारों को वे अपनी रचनाओं का मूल आधार बनाते हैं। उनके उपन्यासों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्वतंत्र भारत के निर्माण, संविधान के आदर्शों, ग्रामीण जीवन की समस्याओं, और भारतीय संस्कृति की निरंतरता से जुड़ी है। उन्होंने न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया, बल्कि उनके प्रभावों को भी मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से जोड़कर प्रस्तुत किया।

उदाहरण के तौर पर, "कोशिशों की उड़ान" जैसे उपन्यासों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। वहीं "कमल खिलने दो" में भारतीय लोकतंत्र के निर्माण और उसमें भारतीय संस्कृति की भूमिका को दिखाया गया है। यह उपन्यास भारत के राजनीतिक इतिहास को भी प्रतिबिंबित करता है, जहाँ एक आम कार्यकर्ता से लेकर जनसेवक बनने की यात्रा दिखाई गई है।

इतिहास की दृष्टि से यह भी उल्लेखनीय है कि डॉ. निशंक ने भारतीय शिक्षा प्रणाली, संस्कृति और संस्कारों को केंद्र में रखते हुए अपने उपन्यासों में ऐसे प्रसंगों का समावेश किया है, जो वैदिक काल से लेकर आधुनिक भारत तक की सांस्कृतिक परंपराओं की

ISSN : 2455-9679
SJIF Impact Factor : 6.008

निरंतरता को रेखांकित करते हैं। उनके लेखन में इतिहास केवल अतीत की बात नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए दिशा देने वाला एक प्रेरणास्रोत है।

इस प्रकार, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास न केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि वे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक दस्तावेज भी हैं, जिनमें भारतीयता की आत्मा जीवंत रूप में विद्यमान है। उनका साहित्य यह सिद्ध करता है कि इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि वह चेतना है जो राष्ट्र और समाज को जोड़कर रखती है।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं – राजनेता, शिक्षाविद् और साहित्यकार। उनके उपन्यासों में भारतीय जीवन-मूल्यों, गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर की स्पष्ट झलक मिलती है। वे लेखनी के माध्यम से पाठकों को भारतीय संस्कृति की महत्ता और राष्ट्रप्रेम का संदेश देते हैं। डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' न केवल एक वरिष्ठ राजनेता और पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री के रूप में जाने जाते हैं, बल्कि वे हिंदी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर भी हैं। उनका साहित्यिक अवदान विशेष रूप से उनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है, जहाँ राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक मूल्यों का सशक्त चित्रण मिलता है। उनके उपन्यास न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज को दिशा देने वाले प्रेरणास्रोत भी हैं। वे भारतीय सभ्यता, संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीय चेतना को अपने साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करते हैं।

डॉ. निशंक के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं की गहरी समझ दिखाई देती है। वे भारतीय जीवनदर्शन, संस्कार, धर्म, भाषा, लोककलाएं तथा लोकसंस्कृति को अपने कथानकों में इस प्रकार पिरोते हैं कि पाठक स्वाभाविक रूप से भारत के सांस्कृतिक वैभव से जुड़ जाता है। उनके उपन्यासों में ऐसे पात्रों का चित्रण होता है जो अपनी पहचान, संस्कृति और मूल्यों को बचाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। यह संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं होता, बल्कि वह राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर भी होता है।

उनका उपन्यास *"कमल खिलने दो"* भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति का जीवंत दस्तावेज़ है। इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय लोकतंत्र की सकारात्मक पक्षों को दर्शाते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि राजनीति यदि ईमानदारी और सेवा-भावना से की जाए, तो वह समाज और राष्ट्र दोनों के उत्थान का माध्यम बन सकती है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित है, जो पाठकों के भीतर भी राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करता है।

इसी प्रकार, *"संसद से सड़क तक"* उपन्यास में डॉ. निशंक ने लोकतांत्रिक व्यवस्था, जनसंघर्ष और सामाजिक जिम्मेदारियों को रेखांकित किया है। इस कृति में एक लोकसेवक की दृष्टि से समाज की समस्याओं और उनके समाधान की ईमानदार खोज प्रस्तुत की गई है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक यह संदेश देते हैं कि संसद में बैठने वाले प्रतिनिधियों का असली मूल्यांकन तब होता है जब वे सड़क पर आमजन के साथ खड़े दिखाई देते हैं।

डॉ. निशंक की लेखनी में सांस्कृतिक चेतना भी उतनी ही सशक्त है जितनी राष्ट्रीय भावना। उनके उपन्यासों में भारतीय त्योहारों, परंपराओं, आस्थाओं, भाषा और लोकजीवन का जीवंत चित्रण मिलता है। वे आधुनिकता के साथ-साथ परंपराओं की रक्षा करने की वकालत करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति की विविधता और समरसता को उजागर करता है।

संक्षेप में कहा जाए तो डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक अस्मिता का गहरा समावेश है। वे साहित्य को केवल रचनात्मकता तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे जन-जागरण, राष्ट्र निर्माण और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम बनाते हैं। उनके उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो आज के समाज के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं।

II. डॉ. निशंक का साहित्यिक अवदान

डॉ. निशंक ने 75 से अधिक ग्रंथों की रचना की है जिनमें उपन्यास, कविता, यात्रा-वृत्तांत एवं निबंध प्रमुख हैं। उनके कुछ प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं:

- संसद से सड़क तक
- कोशिशों की उड़ान
- कमल खिलने दो
- नक़्शे कदम
- स्वर्ग उसी के नीचे है

इन उपन्यासों में उन्होंने आम जनजीवन के संघर्षों, आदर्शों और देशभक्ति की भावना को साहित्यिक भाषा में प्रस्तुत किया है।

ISSN : 2455-9679
SJIF Impact Factor : 6.008

III. आध्यात्मिकता और भारतीय दर्शन के संदर्भ मे

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का साहित्य केवल सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सरोकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें भारतीय आध्यात्मिकता और दर्शन की गहरी अंतर्धारा भी प्रवाहित होती है। उनके उपन्यासों में भारतीयता की पहचान केवल भूगोल या राजनीति से नहीं, बल्कि उस सनातन दृष्टिकोण से जुड़ी है, जिसे भारतीय दर्शन और अध्यात्म का मूल कहा जाता है। यही तत्व उनके साहित्य को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ता है।

भारतीय दर्शन का आधार "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वे भवन्तु सुखिनः", "धर्मो रक्षति रक्षितः" जैसी विचारधाराएं हैं। डॉ. निशंक के उपन्यासों में यह दृष्टिकोण बार-बार उभरकर सामने आता है। उनके पात्र केवल सामाजिक या राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं होते, बल्कि वे आत्मचिंतनशील, आध्यात्मिक विचारधारा से प्रेरित होते हैं, जो भारतीय संस्कृति की गहराई को दर्शाते हैं। वे केवल कर्म नहीं करते, बल्कि अपने कर्म के माध्यम से आत्मा, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन साधते हैं।

उदाहरण के लिए, *"स्वर्ग उसी के नीचे है"* उपन्यास में ग्रामीण भारत की पृष्ठभूमि में अध्यात्म और सेवा का समन्वय दिखाई देता है। इस कृति में यह स्थापित किया गया है कि ईश्वर का साक्षात्कार केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि मानव सेवा और राष्ट्र सेवा में भी संभव है। यह दृष्टिकोण हमें गीता, उपनिषद और महर्षियों के विचारों की याद दिलाता है।

इतिहास की दृष्टि से देखें तो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भी आध्यात्मिक चेतना से ओतप्रोत था – गांधीजी का सत्य और अहिंसा पर आधारित आंदोलन इसका जीवंत उदाहरण है। डॉ. निशंक भी इसी परंपरा को साहित्य के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। वे अपने उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भों में स्थापित करते हैं।

भारतीय दर्शन में "धर्म" केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि जीवन का नैतिक और आत्मिक मार्ग है। यह तत्व उनके उपन्यासों के पात्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे लोककल्याण, निष्ठा, सेवा और त्याग जैसे मूल्यों को जीवन का अनिवार्य हिस्सा मानते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें मात्र राजनीतिक या सामाजिक लेखक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक चेतना का संवाहक बनाता है।

इस प्रकार, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक विकास की उस श्रृंखला का हिस्सा हैं, जो वेदों से लेकर स्वतंत्र भारत तक फैली हुई है। वे भारतीयता को केवल बाह्य संस्कृति नहीं, बल्कि आत्मा की अवस्था मानते हैं। उनकी रचनाएं एक सेतु के समान हैं जो प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक राष्ट्रीय चेतना को जोड़ती हैं।

IV. राष्ट्रीय चेतना का चित्रण

डॉ. निशंक के उपन्यासों में राष्ट्रभक्ति, स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों और भारतीय अस्मिता की चेतना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उदाहरणार्थ:

- **'कमल खिलने दो'** में भारतीय राजनीति की सकारात्मक भूमिका और सामाजिक चेतना का बोध कराया गया है।
- **'संसद से सड़क तक'** में जनसेवा और लोकतंत्र की भावना को प्रबल रूप में चित्रित किया गया है।

इन कृतियों में राष्ट्रीय विचारधारा को जीवन के विविध पक्षों में समाहित किया गया है।

V. सांस्कृतिक चेतना का चित्रण

डॉ. निशंक की रचनाओं में भारतीय संस्कृति की जड़ें गहराई से जुड़ी हैं। लोक-परंपराएं, पर्व-त्योहार, भाषा, मूल्य-व्यवस्था और धार्मिक सहिष्णुता को प्रमुखता से स्थान मिला है।

VI. शिक्षा और विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

- उपन्यासों में **भारतीय संस्कार**, **संवेदनशीलता**, **धार्मिक सहिष्णुता** और **संस्कृतिक गौरव** को केंद्रीय विषय बनाया गया है।
- उनकी भाषा में **लोकभाषाओं का प्रयोग**, **मुहावरों और कहावतों** का समावेश उन्हें आम जनमानस के निकट लाता है।
- **डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना – ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य**
- डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का साहित्य केवल सांस्कृतिक गौरव और आध्यात्मिक मूल्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके उपन्यासों में **शिक्षा और विज्ञान के प्रति गहरी सकारात्मक दृष्टि** भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने अपने साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से यह संदेश दिया है कि किसी भी राष्ट्र का उत्थान केवल संस्कृति या परंपरा से नहीं, बल्कि विज्ञान और शिक्षा की प्रगति से ही संभव है। यह सोच उनके उपन्यासों को केवल सांस्कृतिक दस्तावेज नहीं, बल्कि

ISSN : 2455-9679
SJIF Impact Factor : 6.008

राष्ट्र निर्माण की योजनाओं का वैचारिक आधार बनाती है।

- ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली – जैसे नालंदा, तक्षशिला, वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र – आदि विज्ञान और अध्यात्म का सुंदर समन्वय थी। डॉ. निशंक इसी परंपरा को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में यह आग्रह साफ़ दिखाई देता है कि **भारतीय शिक्षा पद्धति का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नवाचार होना चाहिए।**
- उदाहरणस्वरूप, *"कोशिशों की उड़ान"* जैसे उपन्यासों में उन्होंने यह दिखाया है कि किस प्रकार एक सामान्य छात्र, यदि शिक्षा और विज्ञान के प्रति लगनशील हो, तो वह न केवल अपने जीवन को बदल सकता है बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। इस कृति में ग्रामीण पृष्ठभूमि, शिक्षा से वंचित वर्ग, और वैज्ञानिक सोच के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा का सुंदर मिश्रण मिलता है।
- डॉ. निशंक स्वयं एक शिक्षक और शिक्षामंत्री रहे हैं, अतः उनके अनुभव उनके साहित्य में भी परिलक्षित होते हैं। वे शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं मानते, बल्कि एक **सांस्कृतिक क्रांति** का माध्यम मानते हैं। वे भारतीय शिक्षा में आधुनिक विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, नवाचार, और योग जैसे परंपरागत ज्ञान का समन्वय चाहते हैं।
- उनके उपन्यासों में यह संदेश भी मिलता है कि **विज्ञान विरोधी मानसिकता** केवल विकास को रोकती है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आलोचनात्मक सोच को शिक्षा के केंद्र में लाना चाहिए। साथ ही, वे यह भी मानते हैं कि विज्ञान को **संवेदनशीलता और नैतिकता के साथ जोड़ा जाए**, जिससे वह मानवता के हित में काम करे।
- भारत की ऐतिहासिक उपलब्धियों जैसे आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, भास्कराचार्य जैसे वैज्ञानिक मनीषियों की उपलब्धियों को वे नई पीढ़ी तक पहुँचाना आवश्यक मानते हैं। उनके उपन्यासों में यह विचार प्रमुखता से उभरता है कि भारत की सांस्कृतिक चेतना और वैज्ञानिक सोच साथ-साथ चल सकती हैं और चलनी भी चाहिए।

VII. निष्कर्ष

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से भी प्रेरणादायक हैं। उनके उपन्यासों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की रक्षा, प्रचार-प्रसार और राष्ट्रीय एकता का संदेश गहराई से प्रवाहित होता है। वे एक साहित्यकार के रूप में राष्ट्रनिर्माण में अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। डॉ. निशंक का साहित्य भारतीय दर्शन और आध्यात्मिक परंपरा की गहराई को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक न केवल राष्ट्रप्रेम बल्कि आत्मबोध और सांस्कृतिक गर्व से भी भर उठता है। यह ही उनकी रचनात्मकता की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता का प्रमाण है।डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास शिक्षा और विज्ञान के प्रति गहरी आस्था को उजागर करते हैं। वे यह सिद्ध करते हैं कि यदि हम भारतीय संस्कृति की आत्मा को बनाए रखते हुए विज्ञान और तकनीकी के साथ आगे बढ़ें, तो राष्ट्र को संपूर्ण और संतुलित रूप से विकसित किया जा सकता है। उनका साहित्य एक ऐसे भारत की कल्पना करता है जो **संस्कार और सैटेलाइट** दोनों का समन्वय हो।

संदर्भ सूची

[1] पोखरियाल, रमेश 'निशंक' (2010). कमल खिलने दो. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

[2] पोखरियाल, रमेश 'निशंक' (2005). संसद से सड़क तक. दिल्ली: साहित्य संगम।

[3] पोखरियाल, रमेश 'निशंक' (2012). स्वर्ग उसी के नीचे है. लखनऊ: विद्या भवन प्रकाशन।

[4] पोखरियाल, रमेश 'निशंक' (2008). कोशिशों की उड़ान. दिल्ली: भारत बुक सेंटर।

[5] पोखरियाल, रमेश 'निशंक' (2011). पहाड़ों से संसद तक. प्रभात प्रकाशन।

[6] शुक्ल, अंजलि (2015). "डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना." हिंदी शोध विमर्श, खंड 2, अंक 3।

[7] वर्मा, राकेश (2018). "भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और निशंक का साहित्य." साहित्य अमृत, जुलाई अंक।

ISSN : 2455-9679
SJIF Impact Factor : 6.008

[8] पांडेय, रश्मि (2020). "निशंक के उपन्यासों में राष्ट्रीय चरित्र की स्थापना." भारती शोध जर्नल, अंक 14।

[9] मिश्रा, सुधाकर (2019). "राष्ट्रीय चेतना के वाहक: निशंक के उपन्यास." हिंदी साहित्य समालोचन, अंक 6।

[10] गुप्ता, सुमन (2017). "साहित्य और राजनीति का संगम: डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का योगदान." नई दिशा पत्रिका, खंड 5।

[11] Sharma, Meenakshi (2021). "Representation of Indian Culture in Nishank's Novels." International Journal of Hindi Studies, Vol. 3, Issue 1.

[12] Jha, Alok Kumar (2020). "Nationalism and Identity in Ramesh Pokhriyal's Works." Indian Literary Review, Vol. 5.

[13] Singh, Rekha (2022). "Cultural Consciousness in Post-Independence Hindi Novels." Journal of Hindi Thought, Vol. 7.

[14] Saxena, Neeta (2018). Contemporary Hindi Writers: A Cultural Perspective. Delhi: Anamika Publishers.

[15] त्रिपाठी, रविंद्र (2019). "शिक्षा और विज्ञान के प्रति दृष्टिकोण." हिंदी नवविवेचना, अंक 9।

[16] भारद्वाज, कविता (2021). "डॉ. निशंक के उपन्यासों में भारत की सांस्कृतिक पहचान." कला-संवाद पत्रिका, अंक 12।

[17] Chaturvedi, Amit (2023). Indian Ethos in Modern Hindi Fiction. New Delhi: Academic Books India.

[18] Ministry of Education, Govt. of India (2020). NEP 2020 Vision and Leadership. Document reference to Dr. Ramesh Pokhriyal's contributions.

[19] Joshi, Nidhi (2022). "Exploring Indian Heritage in Nishank's Literary Work." Modern Indian Writing Quarterly, Issue 10.

[20] Dubey, Kiran (2016). "Hindi Upanyas aur Rashtriya Chetna." Sahitya Shodh Patrika, Vol. 4.